Topics-2 अव्ययीभाव : समास — 1

अव्ययीभावः

अधिकारोऽयं प्राक् तत्पुरुषात् ।

इस सूत्र से लेकर 'तत्पुरुष' के पूर्वसूत्र ('अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्' तक 'अव्ययीभाव' का अधिकार है। यानी इस अधिकार-क्षेत्र के सूत्रों द्वारा किये गये समासों को 'अव्ययीभाव' कहते हैं।

'अव्ययं विभक्ति - समीप - समृद्धि - व्यृद्ध्यर्थाभावात्यया - संप्रति - शब्द प्रादुर्भाव - पश्चाद्यथानुपूर्व्य - यौगपद्य - सादृश्य - संपत्ति - साकल्यान्तवचनेषु ।

विभक्त्यर्थादिषु वर्तमानमव्ययं सुबन्तेन सह नित्यं समस्यते । प्रायेणाऽविग्रहो नित्यसमासः, प्रायेणास्वपदविग्रहो वा । विभक्तौ - 'हरि ङि' 'अधि' इति स्थिते -

विभक्ति, समीप, समृद्धि, समृद्धि का नाश, अभाव, नाश, अनुचित, शब्द की अभिव्यक्ति, पश्चात्, यथा, क्रमशः, एक साथ, समानता, संपत्ति, सम्पूर्णता और अन्त — इन सोलह अर्थों में वर्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ समास होता है और उस समास को

अव्ययीभाव संज्ञा होती है। उदाहरण के लिए 'हरि ङि० अधि' में 'अधि' अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ अधिकरण में वर्तमान है, अतः प्रकृत सूत्र से सुबन्त 'हरि ङि० के साथ उसका समास प्राप्त होता है।